आभार

''ज्ञान जितना कष्ट साध्य है उतना ही आनन्दमय भी।'' यह अनुभव अनेक उत्तरदायित्व वहन करते हुए इस शोध प्रबन्ध की सम्पन्नता पर आज मुझे हो रहा है। अनुभूतियों के इस संवाद में सभी संवेदनाओं की शब्दों के साथ अभिव्यक्ति देना सम्भव नहीं पर इस क्षण का उज्जवल आनन्द मुझे सभी स्मृतियों को संजो लेने का आग्रह कर रहा है। जो शोध प्रबन्ध के कार्य में प्रतिपल अलग–अलग रूप में मेरे विश्वास की डोर को अपने प्रेरणात्मक सहयोग से थामे रही है।

आभार किसी भी व्यक्ति विशेष के प्रति भावनाओं से पनपी एक स्वतंत्र सोच की अभिव्यक्ति है। हृदय में तरंगित होते विचारों को यदि शब्दों में आवृत्त कर एक आकार दे दिया जाए तो शायद वे उतने मूल्यवान नहीं रह जाते, जितने वे पृच्छन्न रूप में थे। परन्तु साथ ही यदि हृदय उद्‌गारों को उद्भाषित ना किया जाए तो वे अर्थहीन हो जाते हैं। यह स्थिति तब अत्यन्त जटिल हो जाती है जब ये विचार किसी के प्रति हमारी कृतज्ञता को प्रस्फुटित करते हैं। शोध प्रबन्ध की पूर्णता पर आज मेरे मानस–पटल पर वे व्यक्तित्व बार–बार अंकित हो रहे हैं, जिन्होंने इस शोध प्रबन्ध को अंतिम चरण तक पहुँचाने में मुझे सहयोग प्रदान किया है। सर्वप्रथम मैं उस असीम पराशक्ति ईश्वर के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पण करती हूँ, जिनकी कृपा दृष्टि से मुझे निष्ठा व लगन के साथ इस शोध कार्य को पूर्ण करने की शक्ति मिली। मैं सादगी व संस्कारों से ओतप्रोत वनस्थली विद्यापीठ परिवार के महत्त्वपूर्ण स्तम्भ पूजनीय स्वर्गीय प्रो. दिवाकर शास्त्री (दादा) की सहृदय आभारी हूँ, जिनके आदर्शों एवं मूल्यों से प्रभावित होकर अपने अध्ययन को संयम एवं दृढ़तापूर्वक पूर्ण कर पायी। इसके साथ ही मैं प्रो. चित्रा पुरोहित (अध्यक्षा), प्रो. सिद्धार्थ शास्त्री (उपाध्यक्ष), प्रो. आदित्य शास्त्री (कुलपति), प्रो. ईना शास्त्री (सह–कुलपति), प्रो. धर्म किशोर (मंत्री) के प्रति हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने मुझे वनस्थली विद्यापीठ में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्रदान किया। कोई भी कार्य योग्य मार्गदर्शन के

अभाव में पूर्ण नहीं हो सकता, क्योंकि यह वह माध्यम है जो भटकाव से सचेत कर सही एवं उचित मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है और यह कार्य गुरु से अच्छा कोई नहीं कर सकता है। शिष्य की किसी भी रचना या कला साधन को पूर्णता प्रदान करने में गुरु की प्रेरणा सदैव आधार होती है। इस सन्दर्भ में मैं अपने गुरु डॉ. निर्मला सिंह (प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग) के प्रति श्रद्धावनत हूँ जिन्होंने विषय चयन से शोध प्रबन्ध की पूर्णता तक मुझे मार्गदर्शन प्रदान किया तथा जिनकी सुरुचिपूर्ण सक्रिय सहायता, आत्मीयता, अभिप्रेरणा एवं कुशल निर्देशन के फलस्वरूप ही यह कार्य संभव हो पाया है। अध्ययन के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मैं उनके विनम्र सानिध्य से काफी प्रभावित रही हूँ। अपने इस अध्ययन में पूर्ण रुचि के साथ अत्यधिक सहयोग प्रदान करने हेतु मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। मैं स्वर्गीय प्रो. अरूणा वत्स, डॉ. संगीता विजय, डॉ. रुपाली भारोदिया, डॉ. सुनील महावर एवं डॉ. प्रियदर्शनी पुरोहित, जिन्होंने समय–समय पर मुझे प्रोत्साहित एवं उत्साहित किया के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ।

मानव की सृजनशीलता को परोक्षरूप में अंकुरित एवं पल्लवित करने वाला बीज परमस्नेह व अगाध प्रेरणा होता है। मेरे इस शोध कार्य के मूल प्रेरणा स्त्रोत मेरे श्वसुर श्री ओम प्रकाश चास्टा व मेरी सासु माँ श्रीमती शशि चास्टा के पूर्ण सहयोग, प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद से आज मैं इस स्तर तक पहुँच पाने में सक्षम हो पायी हूँ। हर लगन के पीछे किसी का प्यार, किसी का लगाव, किसी का जुडाव होता है। इस स्नेहाशीष से परिपूर्ण मेरे आदरणीय व पूजनीय पापा (स्वर्गीय श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा) एवं ममतामयी माँ श्रीमती सन्तोष शर्मा को विनयाञ्जलि अर्पित करती हूँ, जिन्होंने हाथ पकड़कर लिखना सिखाने से इस शोध कार्य के प्रति प्रत्येक शैक्षिक चरण तक मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

आभार शृंखला की इस कड़ी में अपनी शोध यात्रा में मुझमें धैर्य और विश्वास का संचार करने वाले तथा समय–समय पर प्रोत्साहन, विशिष्ट सहयोग और हरसंभव सुविधा प्रदान करने वाले मेरे जीवन साथी श्री दीपक चास्टा के प्रति आभार

प्रकट करना उनकी उदार भावना का अस्वीकार होगा। किन्तु उल्लेखनीय है कि मैं जिस पथ की ओर अग्रसर हुई उसमें मेरे जीवनसाथी ने आने वाली बाधाओं को दूर करते हुए मुझे मंजिल तक पहुँचने का एवं अपने स्वप्न को वास्तविक रूप में देखने का अवसर प्रदान किया।

मैं अपनी पूजनीय दादी सासु माँ श्रीमती कमला चास्टा, चाचा ससुर श्री भरत चास्टा, चाची सासु माँ श्रीमती सुनिता चास्टा का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनके वात्सल्यपूर्ण स्नेह, शुभाशीर्वाद और विभिन्न उपलब्ध सुविधाओं के परिणामस्वरूप मैं इस मुकाम तक पहुँचने में सक्षम हो सकी। इस शोधकार्य को सम्पन्न करने में मेरे देवर श्री पीयुष चास्टा व तरूण चास्टा का योगदान अप्रतिम है। दूर–दराज तथा विकट परिस्थितियों से ग्रस्त गाँवों में जाकर महिला उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करना मेरी सीमाओं से बाहर था, किन्तु इस असीम को समीम सबने बनाया। मैं सर्वाधिक ऋणी हूँ मेरी देवरानी प्रियंका की जिन्होंने मुझे पारिवारिक दायित्वों एवं चिंताओं से मुक्त रखकर निरन्तर, निर्विघ्न अध्ययन करने की प्रेरणा दी। मैं हितअभिलाषी देवरानी मीनाक्षी चास्टा के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिसने मुझे निरन्तर सहयोग प्रदान करते हुए मेरा उत्साह वर्धन किया। साथ ही मैं अपनी प्रिय छोटी बहिन अंतिमा के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ, जिसका वात्सलयपूर्ण व्यवहार और स्नेह प्रेरणा का प्रकाश पुंज बनकर मेरे पथ को आलोकित करता रहा। साथ ही दीदी जीजाजी अंजलि शर्मा व डॉ. ऐलोक शर्मा, अनिता व मनीष चतुर्वेदी व विनित जी एवं छोटे भाई रोहित तिवारी का भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिनका सहयोग व स्नेह मुझे प्राप्त हुआ। अपनी पुत्री चक्षिता चास्टा का प्यार एवं शुभकामनाओं को विस्मृत नहीं कर पाती जो शोध कार्य के दौरान मेरे लिए स्फूर्तिदायक रही। चिन्ता के क्षणों में ननद राशि जी, छोटे देवर तन्मय जी एवं छोटे पुत्र अर्थव एवं तक्षु की चुलबुली बातों ने भी मुझे पुनः नए उत्साह व ऊर्जा से परिपूर्ण किया। मैं प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं अजमेर जिले की ग्राम पंचायतों की महिला सरपंच एवं अन्य सदस्यों की ह्रदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य हेतु तथ्य सकंलन में अपना अमूल्य समय एवं सहयोग प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप ही शोधकार्य को गति मिली।

मैं सचिवालय जयपुर, पंचायती एवं ग्रामीण विकास विभाग, अजमेर जिला सांख्यिकीय विभाग, जिला निर्वाचन आयोग, अजमेर, राजस्थान विश्वविद्यालय, महिला अध्ययन केन्द्र तथा वनस्थली विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ।

शोध कार्य के क्षेत्र में यह मेरा प्रथम प्रयास है। पूर्ण कर्त्तव्य निष्ठा के बावजूद इसमें यदि कुछ त्रुटि हो तो नीरक्षीर विवेकी विद्वज्जनों से अपनी साधना की समालोचना के लिए सदैव तत्पर रहूँगी।

धन्यवाद !

दिनांक : .....

मोना चास्टा

वनस्थली विद्यापीठ

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
1.	अध्याय प्रथम – परिचयात्मक	1–61
2.	द्वितीय अध्याय – अवधारणात्मक विवेचन	62–155
3.	अध्याय तृतीय – अध्ययन क्षेत्र का पारिस्थितिकीय विवेचन एवं विश्लेषण	156–202
4.	अध्याय चतुर्थ – उत्तरदात्री परिचय	203–225
5.	अध्याय पंचम् – ग्रामीण स्थानीय महिला नेतृत्व एवं सुशासन के प्रति दृष्टिकोण : विवेचन एवं विश्लेषण	226–337
6.	अध्याय षष्ठम् – शोध निष्कर्ष, समस्याएँ एवं सुझाव	338–402
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	I-XXXIX
	प्रश्नावली	XL-LVI